Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College (Ara)
B.A Part- III
paper- III
Topic- Mohammad Ghazni Part- I

महमूद गजनबी के आक्रमण का संक्षिप्त परिचय देते हुए उसके महत्व की समीक्षा करें :—

अरबों के बाद [illegible] ने भारत पर आक्रमण किया। तुर्क चीन की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर निवास करने वाली एक असभ्य एवं बर्बर जाति थी। अरबों का आश्रय लिया हुआ था। [illegible] तुर्कों में [illegible] के महत्वाकांक्षी भी थे। युद्ध में सैनिक साम्राज्य की स्थापना के लिए सब गुण उनमें विद्यमान थे।

भारत में सबसे पहले [illegible]

तुर्की आक्रमणकारी आये वे गजनी के शासक [illegible] से सम्बन्धित थे। सुबुक्तगीन की मृत्यु के पश्चात [illegible] पुत्र महमूद 998 ई० में बड़ी शान शौकत के साथ गजनी का राजा बना। राजगद्दी ग्रहण करते समय उसकी अवस्था 27 वर्ष की थी। 'तारीख-ए-गुजीदा' के अनुसार महमूद ने [illegible] के राजा खलफ बिन अहमद को पराजित कर सुल्तान की उपाधि धारण की। वह एक कट्टर मुसलमान था। उसने खलीफा की उपाधियाँ ग्रहण करके प्रतिवर्ष हिन्दुओं के विरुद्ध जेहाद (धर्म-युद्ध) करने की प्रतिज्ञा की थी। इस्लाम धर्म के प्रचार और धन प्राप्ति के उद्देश्य से उसने भारत पर 17 बार आक्रमण किया।

महमूद बड़ा योग्य चतुर और ~~महान~~ महत्वाकांक्षी सेनापति था। परन्तु वह धन का लोभी और धर्मान्ध भी था। महमूद ने तुर्क कबीलों के खिलाफ इस्लामी राज्य की रक्षा की तथा ईरानी संस्कृति को पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भाग लिया।

इसके साथ ही महमूद के आक्रमण के ~~निम्नलिखित आक्रमण हैं:~~ का संक्षिप्त परिचय :—

हिन्दू शाही राजवंश

महमूद का प्रथम भारतीय आक्रमण पश्चिमोत्तर भारत के शाही राजा जयपाल पर 1000 ई० में हुआ।

महमूद गजनवी का पहला आक्रमण भारत पर 1000 ई० में हुआ और वह सीमांत दुर्गों, प्रदेशों के कुछ नगरों और किलों को जीतकर वापस चला गया। आधुनिक इतिहासकारों की दृष्टि में महमूद के इस आक्रमण का कोई महत्व नहीं है।

नोट → 971 ई० में इसका जन्म हुआ।

जयपाल पर आक्रमण

महमूद ने पश्चिमोत्तर भारत के शाही राजा जयपाल पर 1001 ईस्वी पर आक्रमण किया। पेशावर में दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ, जिसमें जयपाल की पराजय हो गई, जिसके पश्चात् उसे भारी हानि हुई तथा 50 हाथी देने पड़े। महमूद उसकी राजधानी उदभाण्डपुर को लूटने के बाद अतुल सम्पत्ति लेकर गजनी वापस लौट गया। जयपाल इस घटना को अपने मन से मिटा न सका, और उसने आत्महत्या कर ली। इसके बाद आनन्दपाल तथा महमूद की सेनाओं के बीच दो बार युद्ध हुये और दोनों ही बार महमूद की विजय हुई।

भेरा पर आक्रमण

महमूद के आक्रमण का तीसरा अभियान 1004 ईस्वी भेरा में हुआ।

भटिण्डा पर आक्रमण

महमूद ने भटिण्डा के राजा वाजिराव पर 1005 ईस्वी में आक्रमण किया। भटिण्डा में एक सुदृढ़ दुर्ग था, जो पश्चिमोत्तर भारत से गंगा की उपजाऊ घाटी तक पहुँचने के मार्ग में पड़ता था। महमूद ने दुर्ग का घेरा डाला लेकिन वाजिराव ने बड़ी वीरतापूर्वक दुर्ग की रक्षा के लिए लड़ाई की, लेकिन अंत में विजय महमूद को ही हुआ। और उसने नगर के निवासियों को इस्लाम धर्म मानने को विवश किया।

मुल्तान पर आक्रमण

महमूद ने 1006 ई० में मुल्तान पर आक्रमण किया, वहाँ का राजा फतेह दाऊद शिया मतावलम्बी था। दाऊद को पराजित किया तथा अपनी ओर से सुखपाल को वहाँ का राजा बनाया। पर सुखपाल ने इस्लाम का धर्म को त्याग कर महमूद के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जिस कारण 1010-1012 के बीच महमूद ने पुनः मुल्तान पर आक्रमण कर उसे बन्दी बना लिया तथा उस पर अपना अधिकार कर लिया।